

# Hridaya Aur Vishudhi Chakra

Date : 16th March 1984  
Place : Delhi  
Type : Public Program  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 16
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Nirmala Yog



सत्य को खोजने वाले सारे भाविक, सात्विक साधकों को मेरा प्रणाम।

कल आपको मैंने अपने अन्दर बसा हुआ जो नाभि चक्र है उसके बारे में बताया था कि ये नाभि चक्र हमारे अन्दर सबसे बड़ी शक्ति देता है जिससे हम अपने क्षेम को पाते हैं। जैसे कि कृष्ण ने कहा था “योग क्षेम बहाम्यहम्”। पहले योग होना चाहिए, फिर क्षेम होगा। योग के बगैर क्षेम नहीं हो सकता और क्योंकि हमने इस देश में पहले योग को खोजा नहीं इसलिए हमारा देश क्षेम को प्राप्त नहीं। क्षेम के बारे में मैंने बताया था कि दुनिया में, हम लोग सोचते हैं, कि जिन देशों में सभ्यता हो गयी और बहुत पैसा हो गया तो लोग हमसे कहीं अधिक सुखी हैं। ये बड़ी गलतफहमी है।

अभी मैं एक जगह वर्णानगर महाराष्ट्र में वहाँ गयी थी। वहाँ एक ‘कोरे’ साहब हैं, उन्होंने बहुत मेहनत करके उस वर्णानगर में सुभत्ता लायी हुई है। वहाँ पर जिस तरह से लंदन में बड़े-बड़े Departmental Stores हैं इस तरह के Stores हैं और सब तरह के प्रसाधन वहाँ मिलते हैं। औरतों के लिए वहाँ पर सब शोभा के लिए beauty aids (सौन्दर्य प्रसाधन) वगैरा सब कुछ है। वहाँ जाने पर लगता है कि जैसे आप विलायत के किसी अच्छे district (जिला) की जगह पर आ गए। कोरे साहब विचारे निःस्वार्थी,

शान्त-चित्त, धार्मिक और बहुत सरल, शुद्ध और सादे आदमी हैं। वो मेरे पैर पर गिरके रोने लगे। कहने लगे, “माँ, ये सब मैंने किया। लेकिन मैं बड़ा अशान्त हो गया हूँ।” मैंने कहा, क्यों, क्या बात है? आपने तो बहुत कुछ पा लिया। यहाँ सबकी सुभत्ता आ गयी। कहने लगे, मैंने एक बात नहीं जानी थी कि इस सुभत्ता से दुनिया इतनी खराब हो जायेगी। हमारे यहाँ लोग जो हैं इतने आदततथी हो गये हैं। यहाँ शराब इस कदर ज्यादा चलने लग गयी है। यहाँ पर बच्चे बिलकुल वाहियात हो गये हैं। यहाँ पर कोई किसी की सुनता नहीं। औरतें भी अपने को पैसे में ही तोलने लग गई हैं। ये सब देखकर के मुझे लगता है कि ये मैंने क्या कर दिया। मेरी तो कोई सुनेगा नहीं, क्योंकि गाड़ी बहुत चल पड़ी। लेकिन माँ आप सन्त हैं, आप कहेंगे तो आपकी बात ये लोग शायद सुन लें और शायद मुड़ पड़ें। क्योंकि ये रास्ता ही इन्होंने गलत ले लिया है। इनके यहाँ divorces (तलाक) होने लग गये इनके बच्चे भाग करके आजकल गाँजा वगैरा पीते हैं और बड़ी दुर्दशा है। जो कुछ भी हमने किया—बहुत विचारों ने किया हुआ है—लेकिन वो कहते हैं कि यहाँ मनुष्य बिलकुल शान्त नहीं। और बहुत दुखी जीव है, आपस में भगड़े, टंटे। किसी भी तरह से व्यवस्था वहाँ पर कुटुम्ब की नहीं है, जिसे आप कह सकते हैं कि ये कुटुम्ब ठीक है।

इसलिए मैंने आपसे कल कहा था कि हमारे अन्दर लक्ष्मी का तत्व जागृत होना चाहिए। और लक्ष्मी का तत्व कुण्डलिनी से जागृत होता है। पैसा



आप दुनिया में कमा सकते हैं। आज पंजाब का हाल देखिए, जहाँ लोगों ने कितना लाखों रुपया कमा करके ऐसा सोचा था कि अब हमें और आकाश में कोई अन्तर नहीं रह गया। उस वक्त भगवान का नाम भी लेना उस पंजाब में मुश्किल हो गया। और आज उसी पंजाब का ये हाल है कि लोगों को समझ नहीं आ रहा कि क्या होने वाला है। वही हाल हरियाणा का है। इतने जोर से ये लोग अपने को बढ़ावा देते चले गये। लेकिन इन्होंने ये नहीं सोचा कि हमारी जड़ कहाँ है। उस जड़ को पकड़ा नहीं। इसलिए उध्वस्त होकर के रह गए। यही हाल पुर्तगाल का है, यही हाल इंग्लैंड का है। हरेक देश में आप जाइए, तो लग रहा है धीरे-धीरे जैसे इन पर हर तरह की गरीबी, हर तरह की परेशानियाँ, हर तरह की दुष्टता धीरे-धीरे छा रही है। अपने शहरों में भी यही हाल हो रहा है।

इसकी वजह क्या है? ऐसी कौन सी बात है, जिसके कारण मनुष्य खराब हो गया है? एक ही वजह सीधी है कि उसके अन्दर लक्ष्मी तत्त्व जागृत नहीं है। उसके अन्दर अगर पैसा आ जाए, तो पैसा बहुत ही दुखदायी चीज है। निरा पैसा अगर किसी में आ जाए तो उससे बढ़कर दुखदायी चीज और कोई नहीं हो सकती। अब अपने मूल की ओर दृष्टि देनी चाहिए।

बहुत से लोग हैं जो कि पैसे से परमात्मा को भी खरीद सकते हैं। और इसलिए वो मंदिरों में जाते हैं, वहाँ बहुत-बहुत पैसे देकर मंदिर बनवाते हैं, गुरुद्वारे बनवाते हैं और दुनिया भर की चीजें करते हैं। और बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं कि हम किसी गुरु को पैसा दे दें तो उसको हम खरीद सकते हैं।

आप परमात्मा को नहीं खरीद सकते। आप सब दुनिया खरीद सकते हैं, परमात्मा को आप नहीं खरीद सकते, और इसलिए इस पैसे में ये

शक्ति नहीं है कि आप अपनी 'शान्ति' को प्राप्त करें। इसमें ये शक्ति नहीं है कि इससे आपको अपना आनन्द मिले। इसमें ये शक्ति नहीं है कि आपका चित्त उस ऊँचे स्तर पर जाए। आप बिल्कुल नीचे गिरते-गिरते ऐसी दशा में पहुँच जाएंगे कि आपको स्वयं आश्चर्य होगा कि हम इतनी ऊँची हस्ती से कहाँ आकर गिरे।

इसलिए हमारे अन्दर कुण्डलिनी का जागरण बहुत आवश्यक है। ये जागरण जब नाभि चक्र से और तरफ फैलता है, चारों तरफ, तो मैंने आपसे कहा था कि यहाँ गुरु का तत्त्व है जो आपको सन्तुलन देता है। अभी आपने जो गाना सुना, ये स्वयं पार हो गए। साक्षात्कार हो गया इन्हें। इसलिए इनमें बहुत ही फर्क आ गया है गाने में। और वो गाना जो है वो आन्दोलित करता है आत्मा के तार को। क्योंकि भारत का जो संगीत है ये भी 'ओम्' से बना हुआ है। हमारे साथ बहुत से विदेशी लोग रहते हैं हर समय, और हमेशा अपने Indian classical music (भारतीय शास्त्रीय संगीत) को बिल्कुल बेसुध होकर सुनते हैं। ऐसे राग जो कि 'ओ' और 'मारवाह'—ऐसे राग कि जो हम लोगों ने सुने भी नहीं। जो हम सुनते भी नहीं। हम लोग तो आजकल इतने सस्ते गाने सुनने लग गये हैं। सब मामले में हम लोग इतने cheap (सस्ते/हल्के) हो गए हैं। हमारे तौर-तरीके, हमारे रहन-सहन के तरीके, बात-चीत के तरीके, हमारे खान-पीन के तरीके, सब चीज इतनी बिल्कुल ओछी हो गयी है कि हम जानते नहीं कि हमारा संगीत कितना ऊँचा है। इस संगीत में सारा 'ओम्' है। लेकिन आजकल के संगीतकार भी शराब पीते हैं, हर तरह के व्यसन में धुले हुए हैं। पैसा कमाने के लिए music (संगीत) गाते हैं। न ही उन्होंने कभी परमात्मा को जाना और न ही उधर उनकी रुचि है। फिर ऐसे संगीतकार क्या दे सकते हैं? इस संगीत को जानने के लिए भी आपको चाहिए कि आप अपनी आत्मा को प्राप्त



करें। नहीं तो इसको गहराई में आप नहीं जान सकते। अब इतने foreign (विदेश) के लोग हैं हमारे साथ में। हर जगह classical music (शास्त्रीय संगीत) का प्रोग्राम होता है और एक-तान सुनते हैं। उनसे पूछिए कि भई तुमने क्या सुना? वो उस पर किसी भी तरह का बाद-विवाद नहीं करते। वो कहते हैं कि ये जो ये आत्मा का संगीत है, इससे हमारे हाथ के vibrations (चैतन्य लहरियाँ) बढ़ते हैं और हमें परम शान्ति मिलती है। लेकिन हमारे लोगों के सामने तो आज कल classical music (शास्त्रीय संगीत) गाना मानो जैसे घबड़ा करके इंसान गाए कि कहीं गाए और पता नहीं लोग लठ्ठ न मारने आ जाए। बहुत सस्ते तरह का music गवलें और इस तरह का संगीत आजकल हमारे यहाँ प्रचलित हो गया है, जिसमें कि किसी भी तरह की परमात्मा की वृत्त न आए। इतना गंदा music आजकल हमारे यहाँ चलने लगा है। न जाने कैसे आजकल हिन्दुस्तान में लोगों ने ये सब चीज मान ली। पहले कुछ गंदे राजे-महाराजे या नवाब लोग ऐसे गाने बैठकर सुनते थे। Democracy (जनतन्त्रवाद) का मतलब ये हो गया कि हर आदमी वैसा ही गंदा महाराजा बन गया या गंदा नवाब बन गया है। Democracy (जनतन्त्रवाद) का मतलब ये ही हो गया है कि जितनी गंदगी इन सब दुष्ट लोगों में थी, जिनके पास सत्ता या थोड़ा-सा पैसा था, वही हमारे अन्दर भी आ जाए। ये सबसे बड़ी demonocracy (राक्षसवाद)—मैं तो इसे demonocracy (राक्षसवाद) कहती हूँ—जिससे हरेक आदमी demon (राक्षस) होने पर लगा हुआ है। इस democracy से किस आदमी में आपने पाया है कि वो उठकर के कोई विशेष हो गया : कोई आदर्श ऐसा इंसान जो ठोस खड़ा होकर कहे कि कोई मुझे छू नहीं सकता, कोई मुझे खरीद नहीं सकता?

इस देश में जितना भी राजकारण है, जब

तक वो धर्म पर नहीं होगा तब तक यहाँ के राज-कारी लोग आएंगे, मिटेंगे, लोग थूकेंगे उन पर। लेकिन इनका राजकारण चलने नहीं वाला, धर्म जब तक अपना नहीं हो सकता है, क्योंकि यह देश हमारा भारतवर्ष धर्म पर खड़ा हुआ है। जब तक धर्म पर हम राजकारण करना सीखेंगे नहीं, रामचन्द्रजी का जब तक हम राजकारण लाएंगे नहीं, Socrates (सुक्रात) का राजकारण हम जब तक लाएंगे नहीं, तब तक ये देश कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता।

ये देश की भूमि और है, इसकी जमीन और है। ये समझना चाहिए। इसकी आत्मा और है। इसको अगर छूना है तो महात्मा गांधी जैसे अपने धर्म पर खड़े होओ—जिस आदमी के लिए आप हाथ उठा करके कह सकते थे कि ये आदमी शुद्ध है, स्वच्छ है और धर्म पर खड़ा हुआ, हमेशा परमात्मा को याद करने वाला है। जो आदमी परमात्मा को याद नहीं करता और परमात्मा के प्रति जिसकी दृष्टि नहीं, इतना ही नहीं, अपने जीवन में जिसके धर्म नहीं, वो इस देश में कभी सफलीभूत हो नहीं सकता। होगा, लेकिन थूकेंगे लोग उस पर। उस पर जब इतिहास लिखेगा, तो कहेगा, "इस आदमी ने इस देश का घात किया।" ये अपना देश है, ऐसा ऊँचा देश है। इस देश के लिए जिनको भी कार्य करना है, पहले अपने धर्म पर खड़े हो।

जिसको देखिए वही राजकारण में चला आता है। मैं देहात में गयी, मैंने किसी से कहा कि भाई तुम क्या कर रहे हो? "मैं राजकारण कर रहा हूँ।" मैंने कहा ये कोई धंधा है? ये क्या चीज हुई, राजकारण कर रहे हैं! जैसे कि जो उठा वही राजकारण करने लग गया।

आज मैं आपके सामने जो चक्र बनाने वाली हूँ जिस पर श्रीराम विराजमान हैं। और इसीलिए



मैंने आपसे बताया कि श्रीराम का राज्य इस संसार में आना चाहिए। सबसे पहले इसे हिन्दु-स्तान में लाना पड़ेगा। जिसने देश के कारण, लोगों के मत के कारण, अपनी पत्नी का त्याग किया। हालांकि वो आदिशक्ति थी, वो जानते थे कि इनके कोई हाथ नहीं लगा सकता—तो भी, इतनी बड़ी मिसाल उनके जीवन की हमारे सामने है और कितने धार्मिक, संकोचपूर्ण, कितने अनु-कम्पा से भरे हुए श्रीराम। वो हमारे सामने आदर्श होने चाहिए। ऐसा हमारे सामने नायक होना चाहिए जिसे हम देखकर कहें कि ऐसे हम बनें। आजकल आप सिनेमा का नायक देख लीजिए, तो वो शराब पीता है, खून खराबा करता है। हर तरह के गलत काम करता है और नायक, नायक का मतलब क्या है? हिन्दुस्तान में ऐसा नायक पहले नहीं होता था। ये अंग्रेजों के नायक होएंगे, या किसी.....। उनके यहाँ तो था ही नहीं कायदे का आदमी। उनके यहाँ कोन रामचन्द्रजी हो गए। एक राजा ने अपनी सात बीबीयों की गर्दन काट डाली। बताइये! सात रानियों की जिसने गर्दन काट दी, वहाँ पर एक राजा साहब वो बैठे हुए हैं। वहाँ किसी भी राजा का आप जीवन पढ़ें तो इस कदर शराबी-कबाबी, दुनिया भर की उसमें गंदगी भरी हुई है। और वो वहाँ का राजा है और वहाँ तो भी, ये कहना चाहिए, ये होते हुए भी, वहाँ लोग ये जानते हैं कि जब तक हम सही रास्ते से नहीं चलेंगे, righteousness (सदाचार) से नहीं रहेंगे, हमारा राज्य चल नहीं सकता। हालांकि वैसी बात है नहीं, क्योंकि उनके बुनियाद में ही नहीं है बातें। हमारे बुनियाद में क्या? एक से एक, शिवाजी जैसे शाह महाराजा शिवाजी जैसे थे। उनका चरित्र क्या था? कितने उज्ज्वल आदमी थे! माँ के भक्त थे। उनकी माँ कितनी तेजस्वी स्त्री थी। एक एक को देखिए हमारे यहाँ, कि हमारा इतिहास भरा पड़ा है; राणा प्रताप। मैं अभी आ रही थी लाजपतनगर यहाँ से। मैंने कहा लाला लाजपत-राय क्या आदमी थे। मुझे इतफाक हुआ उनके

बारे में जानने का। मेरे पिता भी कांग्रेस में थे बहुत पुराने। मैंने एक-एक आदमी देखे हैं। क्या लोग थे!

इनके जैसे लोग अब दिखाई नहीं देते। ये मंगिल्ले मंगिल्ले लोग इस देश में कहाँ से आ गये, मेरी समझ में नहीं आता। इनको क्या कहना चाहिए कि जो अपने को हिन्दुस्तानी कहलाते हैं और जिनके अन्दर जरा सा भी ध्येय नहीं है। कोई भी तत्व नहीं है। वगैर किसी तत्व के संसार में आप कैसे चल सकते हैं?

सारे देश आपकी ओर आँख उठाये देख रहे हैं कि ये इतनी बड़ी democracy (जगत्तन्त्र) ये demonocracy (राक्षसतन्त्र) बन रही है, कि कि ये कुछ विशेष चीज है? इसका एक ही इलाज है कि आप धर्म को प्राप्त हों। जब तक आपके देश में धर्म नहीं आएगा, आप चाहे दुनिया इधर से उधर कर लीजिए, ये देश आप शासन में नहीं ला सकते। यहाँ अराजकता आएगी, यहाँ अशासन आएगा। हमने अपनी, इसमें देखा है कभी भी हम देहात से जा रहे हैं, कहीं से भी जा रहे हों, सन्तों के प्रति इतनी श्रद्धा हर एक जगह है! हर एक जगह। कोई मजाल नहीं कि कोई वहाँ पर अराजकता करता हो।

वो सन्तों की श्रद्धा, वो भक्ति का सागर जो ह उसे समेटना चाहिए। उस पर बुनियाद डालकर के जिस दिन हम अपनी देश की नई नींव डालेंगे, तभी हमारा देश असल में स्वतंत्र होगा। क्योंकि स्वतंत्रता, गांधी जी लड़े स्वतंत्रता के लिए। अगर वो जीवित होते तो कहते "स्व" का "तन्त्र" खोजो। "स्व" का तन्त्र ही सहजयोग। "स्व" के बारे में जानना ही स्वतन्त्रता है।

ऐसा होना चाहिए और होगा भी, क्योंकि चौदह हजार वर्ष पूर्व नाड़ी ग्रन्थ में लिखा हुआ है कि ऐसा होगा इस वक्त में। और सारे दुनिया के देश यहाँ पर झुक कर आएंगे और हमसे सीखेंगे कि



धर्म क्या है और परमात्मा क्या है। ऐसा होना चाहिए। लेकिन आप लोग सब अपने पर विश्वास रखें, सहजयोग में गहरे उतरिये तभी ये कार्य हो सकता है।

हृदय चक्र जो है उसमें तीन उसकी sides हैं। एक तो left (बायें), एक right (दायें) और एक बीच की। right side में श्रीराम का स्थान है। श्रीराम जो पितातुल्य हैं, जो कि benevolent king (उदार राजा) हैं। जो Socrates (सुक्रात) ने बताया ऐसे राजा थे। जिनको सिनाय लोगों के हित के और कुछ सूझता नहीं था। हित कैसे होगा, लोगों का ठीक कैसे होगा, उनका भला कैसे होगा। उन्होंने जो कुछ किया है, इस संसार में, सिर्फ एक विचार से कि मनुष्य का भला कैसे होगा। नगे पाँव बरत में गये कि वहाँ की भूमि उनके चरणों से vibrate (चैतन्यमय) हो जाए। सारा नाटक खेला दुःखदायी नाटक था। शरीर तो उनका था ही जो सहन करता था, लेकिन ये सारा नाटक उन्होंने खेला सिर्फ ये दिखाने की कि एक आदर्श राजा कैसा होना चाहिए। एक आदर्श पिता कैसे होने चाहिए। एक आदर्श पुत्र कैसे होना चाहिए। ये आपका right heart (दायाँ हृदय) है। अगर कोई भी इंसान का right heart (दायाँ हृदय) पकड़ता है, माने ये कि किसी भी इंसान में कोई पिता का दोष हो। समझ लीजिए उसके पिता की मृत्यु जल्दी हो गयी। उसने पिता का सुख न देखा हो, या अगर उसका अपने पिता से सम्बन्ध ठीक न हो, या पिता अगर गलत रास्ते पर चलता हो या वो पिता से दुश्मनी लिए हुए है। कोई-सा भी पिता का जो तत्व है अगर खराब हो जाए तो ऐसे आदमी का right heart (दायाँ हृदय) पकड़ता है और ऐसे आदमी को asthma (दमा) होने का अंदेश है। अब देखिए कहाँ से बात कहाँ ला दी। इस वक्त आपको श्रीराम का ध्यान करना चाहिए, जब आपको asthma हो। इससे आपका asthma ठीक हो सकता है।

अब आपके left hand side (बायें तरफ) में जो heart (हृदय) के चक्र का दोष होता है, वो आपकी माँ की वजह से आता है। अगर आपकी माँ परमात्मा में विश्वास नहीं करती, आपको गलत रास्ते पर ले जाती है, या ज़रूरत से ज्यादा आपको प्यार करके आपको खराब करती है तो भी माँ बड़ी दोषी है।

Jung (युंग) ने अपने एक experiment (प्रयोग) में ऐसा देखा कि एक इंसान आकर के उसे बार-बार बताता था कि मेरी माँ का मुझे स्वप्न आता है कि वो एक witch (पिशाचिनी) है, एक राक्षसनी है। बार-बार मुझे ऐसा स्वप्न आता है। तो उन्होंने अब लड़के से पूछा कि भाई तुम्हारी माँ का तुम्हारे साथ व्यवहार कैसा है। उन्होंने कहा कि भाई मेरी माँ तो ऐसी हैं कि मुझको इतना pamper (अत्याधिक लाड़) करती हैं, इस कदर उसने मुझे spoil (बिगाड़) करके रखा है कि मैं किसी काम का नहीं। उन्होंने कहा ठीक है, इसका मतलब है तुम्हारी माँ राक्षसनी है इसका स्वप्न तुम्हारे अचेतन से, unconscious से आ रहा है और तुमको बता रहा है कि सम्भल के रहो। एक आदमी बताता था कि मुझे अपने बेटे के बारे में ऐसा हमेशा स्वप्न आता है कि वो सिंहासन पर बैठा है और उसके सामने मैं हमेशा नतमस्तक हूँ। Jung (युंग) ने पूछा कि तुम्हारा अपने लड़के से कैसा रिश्ता है? कहने लगे मैंने दूसरी शादी कर ली। मैं उस लड़के की परवाह नहीं करता हूँ। वह तो घर में नौकर जैसा ही है, किसी काम का नहीं। और मुझे ऐसा स्वप्न आता है। अचेतन उसे बता रहा था कि तुम्हारा लड़का जो है वो सिंहासन पर बैठने लायक है, और तुम उसके नीचे खड़े हुए हो, उसके नतमस्तक तुम्हें रहना चाहिए, बजाय इसके कि उससे तुम छल करो और उसे तुम किसी तरह से, इस तरह से व्यवहार करो जिससे वो नगण्य हो जाए।



यही बात है कि मां और बाप का बहुत बड़ा देना बच्चों को होता है। एक तो अपने देश में मां बाप का इस क्रूर अपने बच्चों के प्रति स्वायं होता है, इतना ज्यादा स्वायं होता है कि आवश्यक है ! इसी देश में पन्ना घायी जैसी औरतें हो गयीं। इसी देश में ऐसे लोग हो गये जिन्होंने अपने बच्चे देश के लिए कुर्बान कर दिए। हम खुद अपने बाप की बात कह सकते हैं कि जो हम लोगों को कुर्बान करने में एक क्षण भी न ठहरें, और उसमें वो बड़ा अपने को गर्व समझते थे। और ऐसे हमने अनेक इनके मित्रों को देखा और अनेक लोगों को देखा उस उम्र के, जो अपने बच्चों से कहते कि कुर्बान हो जाओ अपने देश के लिए।

वो गया एक तरफ भगतसिंह का जमाना और आज ये आया है कि मेरा बेटा, मेरी बेटी, मेरा, मेरा, मेरा। यहाँ पर भी जो बता रहे थे, बात सही है कि आकर के मेरा बाप ऐसा, मेरी मां ऐसी, मेरा बेटा ऐसा, मेरा ये ऐसा। दूसरा extreme (पराकाष्ठा) है इंग्लैंड में जो मैंने आप से कल बताया कि अपने बच्चों को ही मार डालते हैं। काम सफ़ा।

ये दो extremes (पराकाष्ठाओं) के बीच में मनुष्य को रहना चाहिए। अपने बच्चों के प्रति भी आपका बड़ा भारी परम कर्तव्य है कि उनको खराब न करें। उनको ये नहीं लगना चाहिए कि हमारे मां बाप हमारे आदर्शों से छोटे हैं। लड़के हैं सिगरेट पीते हैं वचन से। उनको बुरी आदतें लगती हैं। इसका कारण उनके मां बाप हैं। और कोई नहीं। अगर लड़के बिगड़ते हैं तो मां बाप उसके कारण हैं। मां बाप अगर उनके साथ रहें, उनके साथ घूमें फिरें, उनसे दोस्तो करें, उनसे इज्जत से पेश आएँ तो बच्चे नहीं बिगड़ सकते।

अब ये दोनों त्रुटि जो हमारे अन्दर हैं। और मां के दोष से अनेक रोग आ सकते हैं। मां के दोष से ऐसे ऐसे रोग आते हैं कि जिसका निवारण करते-

करते हम पगला जाते हैं। खास कर टी. बी. की बीमारी जो ये मां से होती है। किसी को अगर टी. बी. की बीमारी है तो जिसकी मां वचन में मर गयी हो या मां का प्यार जिसे न मिला हो, जिस आदमी ने मां को जाना नहीं उसे टी. बी. की बीमारी हो जाती है। आप सोचिए इस देश में, इस महान देश में जहाँ मां की लोग पूजा करते हैं, वहाँ कितने लोगों को टी. बी. हो जाती है। इसका मतलब ये है कि मां जो हैं बच्चों को खराब कर रही हैं, मां उनको दोष लगा रही हैं, मां उनसे बुरी तरह से पेश आ रही हैं। इसका मतलब ये नहीं कि आप बच्चों को हर समय डांटते रहें, फट-कारते रहें। लेकिन अपनी प्रतिष्ठा के साथ, अपने बच्चों के सामने ऐसा एक उदाहरण रखना चाहिए कि बच्चे देखें कि ये देखिए ये हमारी मां हैं, उनका बर्ताव कैसा है और हमारा बर्ताव कैसा है। आप ही उनके सामने अगर बहुत cheap (अभद्र) तरीके से रहें, रात दिन अपने श्रृंगार में लगे रहें या पति से हर समय लड़ती रहें, तो वो बच्चा भी आपकी क्या इज्जत करेगा? स्त्री में जब तक वो बात नहीं आएगी, तब तक बच्चे में कैसे आएगी? वही बात पिता की है। अगर पिता स्वयं शराब पीता है, आवारा है, घूमता है, घर में नहीं बँधता है, बच्चों से मिलता जुलता नहीं है, बीबी को बातें सुनाता है, ऐसी के बच्चे कैसे होंगे? क्या बड़े अच्छे हो सकते हैं?

वो जगह जहाँ "यान्हनेवे भागने लग्न संस्कार" छोटे-छोटे उम्र में जो संस्कार हमारे ऊपर लगते हैं वो ऐसे हो होते हैं जैसे कि जिस घड़े के कच्चे रहते वक्त जो उस पर दाग पड़ जाए, उसी प्रकार वो पक्के हो जाते हैं। उस वक्त इतना सम्भालना जरूरी है, इतना उनको प्रेम देना जरूरी है कि जिससे उनकी जो वृद्धि है वो कायदे से हो जाए। पर ऐसा होता नहीं है। ज्यादातर ऐसा होता नहीं है। हम या तो उनको ज्यादा ही पानी देते हैं और या नहीं देते। बीचों-बीच खड़े रहकर



के देखना चाहिए कि हमारे बच्चे किस रास्ते पर चल रहे हैं।

फिर ये कहना समाज ऐसा बना हुआ है, माँ क्या करें? लड़के खराब हो ही जाते हैं। कैसे? आपका चित्त ही नहीं है बच्चे की ओर। कम से कम आप तो कोई शिकायत नहीं कर सकते। इंग्लैंड, अमेरिका में तो लड़कों को dole (बेरोजगारी भत्ता) मिल जाता है १८ साल में, तो वो बेकार जाते हैं। पर आप लोग, आप लोग तो जिन्दगी भर उन बच्चों को पालते हैं। "फिर भी क्या हुआ थोड़ा सा शराब ही तो पीता है ना। सिगरेट पीता है तो आजकल सभी पीते हैं, उसकी गंदी आदतें हैं थोड़ी बहुत, औरतों के पीछे भागता है कोई हर्षा नहीं!"—इस तरह से आप अपने बच्चों के प्रति अपना रुझान रखें, ये तो इसको मैं कहती हूँ कि आप उनके दुष्मन हो गये। क्योंकि जो आप का कर्त्तव्य है उससे अगर आप च्युत हो गए तो आपने उनको तो ऐसे ही गड्ढे में धकेल दिया। यहाँ तक मैंने सुना है, कुछ लोग जो अपने को बहुत अंग्रेज समझते हैं कि 'साहब मैं तो अपने बेटे के साथ बैठकर शराब पीता हूँ।' क्या कहने आपके! इस प्रकार की जिनकी मनोवृत्ति है ऐसे लोग जाने क्यों माँ बाप हो जाते हैं? और होने पर भी उन बच्चों को रात दिन खराब किये जाते हैं। नहीं तो इतना बच्चों के साथ कड़ा रख होता है कि बच्चे घर से भाग खड़े हैं। सोचते हैं हमारे माँ बाप का हमारे प्रति कोई प्रेम ही नहीं। उनको कोई दुलार ही नहीं है।

इसलिए मैं कहती हूँ कि आप सहजयोग में अपने बच्चों को लाएं। पार होने के बाद फिर हम देख लेंगे। उसके बाद बात और हो जाती है। पर पहले आप पार होइये। अगर माँ बाप की ही अक्ल खराब हो तो बच्चों को पार करा के भी क्या फायदा? वो तो गलत रास्ते अपने जो हैं आप बच्चों को सिखाएंगे और हम उनको सही रास्ते सिखाएंगे तो वो कहेंगे, हमारे बाप तो एक बात

कहते हैं और माताजी दूसरी बात कहती हैं।

साक्षात्कार-प्राप्त हमारी लड़की की लड़की है। वो realised soul है। वो एक दिन कहती है कि "माँ! एक बात बताइये ये जो डोर होता है पूर्व जन्म में कुछ खराब काम किए होंगे। मैंने कहा क्यों? क्यों कि उसके माँ बाप कहते हैं कि तुम इंसान को खाओ और उनको भगवान कहता है कि मत खाओ, तो वो क्या करे? देखिए! उसके सामने ये प्रश्न खड़ा हो गया कि इसने पूर्व जन्म में कुछ बुरे कर्म करे होंगे, नहीं तो ये ऐसे माँ बाप से क्यों पैदा हुआ कि जो कहते हैं इंसान को खा लो। यही प्रश्न हमारे दिमाग में आना चाहिए आखिर ऐसा कौन सा हमने पूर्वजन्म में कर्म किया है कि जिसके कारण हम अपने बच्चों को ठीक रास्ते पर नहीं लगा सकते। ये दोनों चक्र ठीक हो जाने से, आपकी माँ और बाप, ये दोनों स्थितियाँ जो हैं ठीक हो जाती हैं। आप अगर बाप हैं तो आप बाप की दृष्टि से ठीक हो जाते हैं। अगर आप पुत्र हैं तो आप पुत्र की दृष्टि से ठीक हो जाते हैं। अगर आप माँ हैं, तो आप माँ की दृष्टि से ठीक हो जाते हैं। अगर आप माँ की बेटी हैं या पुत्र हैं तो उस तरह से ठीक हो जाते हैं। ये दोनों चक्र ठीक हो जाने से ही अपने देश के जो नव-युवक हैं ये संभलेंगे।

आप जानते हैं कि हजारों लोग परदेश से हमारे शिष्य हैं। इनके माँ-बाप तो पागल ही लोग हैं अधिकतर। वो लोग शराब पीना, रात भर बाहर रहना। वहाँ की औरतें चार-चार बार शादियाँ करती हैं। आदमी छः छः बार शादियाँ करते हैं। और सब अनाथालय में बुढ़ापा काटते हैं। ऐसे बिचारों ने कौन से पूर्वकर्म किए हैं कि उनको ऐसे माँ-बाप मिले। पर ये लोग जब सहजयोग में आ गए तब से सम्भल गए हैं कि अब हमारी शादियाँ हो गयीं सहजयोगियों में। अब हमारे यहाँ बड़े-बड़े ऋषि मुनि पैदा हो रहे हैं। और इनके लिए हमें कैसे बर्ताव रखना चाहिए। उन्होंने



एक नयी धारा बना ली है कि इनके सामने किस तरह से रहना चाहिए। जो जो भी कार्य अब सहजयोग में हो रहा है, उसमें सबसे बड़ी चीज जो ध्यान में रखने की है कि हमारी आत्मा क्या बोलती है। और आत्मा शब्दों से बोलती नहीं है। ये चैतन्य लहरियों से बोलती है और उसी से जाना जाता है कि हम कहां चल रहे हैं।

अब बीच का जो चक्र है, ये साक्षात् देवी जगदम्बा का है। जो कि सारी सृष्टि की माँ है। ये जगदम्बा जो है ये भक्तों का रक्षण करती है। जो भक्त, इस गोल जगह बना हुआ जगह जहाँ है, जहाँ पर कि भक्त लोग सब भगवान को खोजते हैं, उनका रक्षण करती है। उनके लिए उन्होंने राक्षसों का वध किया, उनका रक्त पिया, उनके भूतों के भूत खा लिए, उन्होंने संहार कर करके इन लोगों को ठीक किया।

बहुत से लोग ऐसा कहते हैं, भई हिन्दुओं के देवी देवता जो हैं ये बड़े क्रूर हैं, और nonvegetarian (मांस भक्षी) हैं। तो मैं कहती हूँ अगर ये राक्षसों को देवी न खाएँ तो क्या आप लोग खाइयेगा? इन राक्षसों को देवी न मारे तो क्या आप लोग मारियेगा? कंस को अगर कृष्ण नहीं मारते तो क्या आप लोग मारते? रावण को राम न मारते तो कौन मारता? उस पर बहुतां का ये कहना है, कि ये तो देव योनी के लोग हैं और ये सबको मारते रहते हैं। इस तरह का विचार करने से आप जो दुष्ट और राक्षस हैं उन सबको खोपड़ी पर बिठा लें। उनका नाश न करिए, उनको आप किसी तरह से नष्ट न करिए, उनके साथ कोई दुर्व्यवहार न करिए, उनको बिठा करके उनकी आरती उतारिए।

जगदम्बा ने अनेक बार जन्म लिए। इनके ऐसे तो नौ जन्म बहुत विशेष माने जाते हैं, लेकिन उनके हजार जन्म कम से कम हुए हैं। और हजार बार संसार में आकर उन्होंने, जो भक्त लोग थे, उनको रक्षा की। जब ये चक्र आपके अन्दर जागृत

हो जाता है, जब जगदम्बा का चक्र आपके अन्दर जागृत हो जाता है तो आपके अन्दर से भय, आशंका सब भाग जाती है। कोई किसी प्रकार की भय-आशंका नहीं रह जाती।

जिस वक्त किसी स्त्री में ये चक्र पकड़ जाता है जब भय हो जाता है उसे या उसका विशेष करके जब left heart (बायाँ हृदय) उसका पकड़ता है और उसे ये लगता है कि उसका मातृत्व जो है, उस पर ही आघात आ रहा है, उसका पति जो है और औरतों के पीछे भाग रहा है, उसके मातृत्व को ही अब किसी तरह से लांछन आने वाली है तब उसको जो बीमारी होती है इसे हम लोग breast cancer कहते हैं। ये इन दो चक्रों की वजह से औरतों में होती है। विशेष करके left चक्र को वजह से, जब कि माँ का मातृत्व जो है वो आदमी सोचता है कि हमें क्या करना है, हमारी बीबी है तो क्या, बच्चे हैं तो क्या। हम जैसे चाहेंगे, हमें स्वतन्त्रता है, हम जैसे चाहे रहें। ऐसे पतियों की परेशानी की वजह से औरतों को breast cancer हो जाता है। इंग्लैंड, अमेरिका में भी लोग कहते हैं इसमें क्या है? ये सब कुछ ठीक नहीं? एक ही पत्नी क्यों होनी चाहिए? और औरतें भी कहती हैं एक ही पति क्यों होना चाहिए? पर वहाँ फिर औरतों को breast cancer क्यों हो जाता है? और आदमियों को परेशानियाँ क्यों हो जाती हैं? अगर ये चीजें कुछ अच्छी होती, नैसर्गिक चीज होती, तो मनुष्य उससे सुखी होता। पर आपने कभी देखा है जिस आदमी ने अपनी पत्नी को छोड़ा है और दूसरे आदमी के साथ स्वेच्छाचार कर रहा है वो सुखी है?

तो इस वजह से हमारी जो विवाह संस्था है उसका बड़ा मान करना चाहिए। और ये समझ लेना चाहिए कि अपनी पत्नी जो है ये घर की गृहलक्ष्मी है। इसका अपमान करने से, इसको दुख देने से, इसको तकलीफ देने से हम अपनी घर की



गृहलक्ष्मी को सता रहे हैं। अर्थात् जैसे मैंने कल आपसे बताया कि गृहलक्ष्मी को भी इस योग्य होना चाहिए कि वो गृहलक्ष्मी कहलाये।

लेकिन ये सब होते हुए, ऐसी पत्नियों और ऐसी दुखी पत्नियों को, अगर कोई तकलीफ हो जाए, तो उसके लिए हमें समझ लेना चाहिए कि इनके घर में ही कोई तकलीफ ऐसी बन रही है जिसकी वजह से ये स्त्री विचारी धीरे-धीरे धुलती जा रही है।

अब जो जगदम्बा का चक्र है उसकी वजह से जब पकड़ जाता है, तब मनुष्य जो है वो भोतु हो जाता है, डरपोक हो जाता है, उसको भय सा रहता है, वो हर समय डरता है। कैसे भाषण दें, क्या बोलें, किससे क्या कहें, मुझे तो डर लगता है। मैं नहीं कह सकता। और जब उसका ये चक्र ठीक हो जाता है तब उसके अन्दर धैर्य आ जाता है। वो उड़्ड नहीं होता, वो किसी तरह से arrogance (उद्दण्डता) नहीं करता, लेकिन उसकी भावा में एक तरह की ममता, उस मां की, जो कि उसके अन्दर जागृत हो गयी है, आ जाती है। लेकिन वो किसी से डरता नहीं। ईसा मसीह का उदाहरण आप देख लीजिए कि जिन्होंने सूली पर चढ़के ये कहा कि प्रभु ये लोग जानते नहीं, क्या करें, इन को माफ़ कर दें। वो ही हाथ में हंटर लेकर के उन्होंने सबको मारा था जो वहाँ पर चीजें बेच रहे थे। और जिस तरह मारी मगदागलनी (नामक) एक वेश्या थी—वेश्या और सन्तों का क्या सम्बन्ध, कुछ हो ही नहीं सकता—जब लोग उसको पत्थर उठाकर मारने लगे तो उनके सामने जाकर के छाती खोल कर खड़े हो गए और कहा कि तुममें से जिसने कोई पाप नहीं किया हो, वो मुझे पत्थर मारे। ये हिम्मत ! ये अपने पर विश्वास। ये देवी की कृपा से, माँ की कृपा से होता है ! इसलिए हमारे यहाँ शक्ति को बहुत बड़ा मानते हैं। लेकिन हम लोग खुद ही अपने को शक्तिहीन कर लेते हैं। कितने लोग संसार में हैं जो ये समझते हैं कि मां

का स्थान बहुत ऊँची चीज़ है। श्री गणेश इतने ऊँचे स्थान पर इसलिए हैं क्योंकि वो अपनी मां को ही मानते हैं और किसी को मानते ही नहीं। क्यों कि वो जानते हैं कि मां ही शक्ति है। गुरु दुनिया भर के, जो भी सही गुरु हो गए, वो भी मां को मानते हैं। वेद हैं वे भी मां को मानते हैं। दुनिया में कोई भी ऐसा शास्त्र नहीं जो आदि मां को न मानता हो। और हम भी मां को मानते हैं। लेकिन हम ये नहीं जानते कि मां चीज़ कितनी ऊँची है। कभी-कभी ये भी होता है कि मनुष्य के अन्दर आशंका और भय इस वजह से आता है कि—उसको उसके मां बाप से वो प्यार, वो संरक्षण हो सकता है—उसे किसी और भी वजह से भय आ जाए, उसकी कोई सो भी वजह हो जाए, उसमें जाने की जहरत नहीं। हम लोग psychologist (मनोवैज्ञानिक) जैसे ये नहीं पूछते बैठते कि भई तुम्हारे बाप कैसे हैं, तुम्हारी मां कैसी है, तुम्हारी क्या कैसा। ज्यादा से ज्यादा ये पूछेंगे कि तुम्हारे मां बाप जिन्दा हैं या नहीं। लेकिन जैसे ही वो जागृत हो जाता है, जैसे ही ये चक्र जागृत हो जाते हैं, मनुष्य एकदम शेर दिल हो जाता है। शेर दिल हो जाता है। क्योंकि देवी जो शेर पर ही विराजती हैं। बहुत से लोग दुर्गाजी को मानते हैं। मैं मानती हूँ कि उनके प्रति बहुतों की श्रद्धा है और उनके बारे में जानकारी बहुत कम है। बहुत कम जानकारी है कि वो कितनी प्रभावशाली हैं और एक बार अगर उनको प्रसन्न कर लीजिए तो दुनिया में किसी से डरने की बात नहीं।

इसके बाद जो चक्र इससे ऊपर है, जिसे कि विशुद्धि चक्र कहते हैं, ये बहुत महत्वपूर्ण चक्र है। ये चक्र श्री कृष्ण का है और अब होली आ रही है, कल ही। श्री कृष्ण के चक्र पर जितना कहें सो कम। इस चक्र में सोलह कलियाँ हैं, क्योंकि सोलह उनकी कला हैं—श्री कृष्ण की। और उनकी जो सोलह हजार वीविर्पा थीं वो उनकी सारी शक्तियाँ थीं,



जिनको कि उन्होंने इस संसार में जन्म देकर के उस राजा के यहाँ फंसाया और उसके बाद उनसे विवाह कर लिया। कृष्ण की लीला समझने के लिए भी सहजयोग करना पड़ता है। उसके बगैर आप कृष्ण को नहीं समझ सकते। उनके होली का अर्थ भी आप नहीं समझ सकते, होली क्या थी? होली में यही था कि जो पानी जमुना जो में बहता था उसमें श्री राधा के पैर पड़ने से वो चैतन्यमय हो जाता था, उस पानी को गगरी में लेकर के उस में लाल रंग घोल करके और जब वो किसी के पीठ पर छोड़ते थे तो वो असल में उनकी कुण्डलिनी ही जागृत करते थे। उन्होंने बचपन में जो कुछ उनकी लीलाएं की सबमें सहजयोग किया। उस वक्त कोई ऐसे हॉल (hall) नहीं बने हुए थे। ऐसे परमात्मा को खोजने वाले लोग नहीं थे। कोई इस तरह की व्यवस्था नहीं थी। ऐसा यंत्र नहीं थे। ये तो सब अब देन हो गयी है अपने Science (विज्ञान) की, कि जिसको हम इस्तेमाल कर सकते हैं। उस वक्त उन्होंने जो लीलाएं करी वो सब लीला सिर्फ सहजयोग की थीं। जैसे कि गोपियाँ थीं वो जब पानी भरने जाती थीं, वो अपने सर पर गगरी रखके जब लोटती थी तो पीछे से उनको कंकड़ मारते थे। उससे वो जो पानी था, जो चैतन्यमय उनके पीठ के रोड़ की हड्डी पर दौड़े, जिससे इनमें जागृति आ जाए। रास, रास माने 'रा' माने शक्ति और 'स' माने साहित्य। जैसे सहज है वैसे ही। हाथ में सबके हाथ पकड़ करके और अपनी शक्ति सबमें वो दौड़ाते थे और इसी को 'रास' कहते थे। ये 'रासलीला' जो होती थी, उसी से वो शक्ति दौड़ा करके और लोगों को जागृत करते थे।

मैं जब अमेरिका में पहली बार गयी वहाँ पर एक इंजीनियर Lord साहब मिले। उन्होंने कभी भी तो, उन दिनों में मैं तो गयी हुई थी १९७३ में, उन दिनों उन्होंने कोई कृष्ण के बारे में सुना नहीं था और वो ग्रोहियों में जो बों-बोच अमेरिका के रहते

थे। उनको कुछ मालूम नहीं था। लेकिन जब उनको realisation (साक्षात्कार) हुआ तो मुझे कहने लगे कि मां मैंने एक अजीब चीज देखी realisation के बाद। मैंने पूछा क्या देखा? कहने लगे मैंने ये देखा कि बहुत से हम लोग बच्चे खेल रहे हैं और एक बड़ा प्रदीप्त लड़का है जिसका रंग थोड़ा सांवला है, लेकिन बड़ा प्रदीप्त है, और वो हम लोगों का पिरामिड (pyramid) बना कर हमारे ऊपर चढ़ गया। और ऊपर में एक मिट्टी का pot (घड़ा) रखा हुआ था। उसको उसने अपने हाथ की एक लकड़ी से तोड़ा। और वो हमारे सब के ऊपर घर-घर-घर, देखिए, बहने लग गया। और बहते ही हमारे अन्दर एकदम चैतन्य आने लगा। उसने जो बात बतायी तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इसने कैसे जाना। उसने कभी जाना नहीं था कि गोपाल काला क्या होता है और ये जाकर के ऊपर क्यों तोड़ते थे। ये ही उनकी लीला थी, जिससे वो सबके सहस्रार पर चढ़के और वहाँ से वो पानी तोड़ते थे जिससे सबके ऊपर घर-घर पानी नीचे आ जाए, जिससे लोग जागृत हो जाएं।

उनकी सारी लीलाएं जितनी थीं सब सहजयोग की थीं। और उन्होंने जो कृषि की है इसलिए उनको कृष्ण कहा जाता है। उन्होंने जो कृषि की है वही आज बढ़कर के आप लोगों के रूप में मेरे सामने आज वो तैयार चीज आयी हुई है जिससे कि उसके फल का देना मेरे लिए साध्य है, मुझे देना ही होगा। ऐसे कृष्ण के बारे में क्या कहें और कितनी बातें बताएं।

गीता, जिसके बारे में लोग हजारों बातें कहते हैं, समझने के लिए भी आपको सहजयोग में आना चाहिए। उसके बगैर आप गीता भी नहीं समझ सकते। सिर्फ गीता पढ़ पढ़ के कुछ गीता समझ में नहीं आएगी। गीता जो, जिसने सुनायी है, वो कौन थे। पहले उनके बारे में जान लेना चाहिए।



बड़े होशियार हैं। होशियार ही नहीं थे, वो उम वक्त के राजदूत थे, और diplomacy का बिल्कुल जो अर्थ है, essence है, उसको जानते थे। अब diplomacy का क्या essence है? कि कोई ऐसी absurd (बाहियात) बात करो कि जिसके करने से आदमी मुंह के बल गिरे। कृष्ण का खेल जो है उसको समझने के लिए पहले आपको सहजयोग में उतरना चाहिए। अच्छा, मैं समझने की कोशिश करती हूँ। लेकिन आप समझने की कोशिश कर।

जैसे कि उन्होंने शुरू शुरू में ही बना दिया। क्योंकि दुकानदार तो थे नहीं कि पहले चुरी चीज दिखाओ, फिर धीरे-धीरे अच्छी चीज दिखाओ। तो उन्होंने पहले ही बढ़िया चीज दिखा दी। उन्होंने कहा कि आपको जान होना चाहिए। जान माने क्या? बुद्धि से नहीं, बुद्धि से नहीं। जान माने आपके central nervous system में आपको जानना चाहिए, आपको प्रचीती होनी चाहिए, कि परम क्या है जिससे आप स्थितप्रज्ञ होते हैं। साफ साफ उन्होंने दूसरे ही chapter (खण्ड) में कह दिया, व्याख्या दे दी कि सहजयोगी कैसा होना चाहिए। पर उसके बाद उन्होंने देखा कि अर्जुन तो जो है वो अपनी लगा रहे थे। उन्होंने कहा कि इधर तो तुम कह रहे हो कि तुम साक्षी बनो, इधर तुम कह रहे हो कि तुम जानी बनो और उधर तुम कह रहे हो कि तुम युद्ध में जाओ। तो ये कैसे हो सकता है। अब तो जान गए कि ये सीधे नहीं आने वाले।

अर्जुन जो है उस वक्त का भक्त है समझ लीजिए। उसको वो, उसका वो प्रतिनिधित्व करता है, represent करता है। अर्जुन ने उनसे पूछा कि ये कैसे हो सकता है? कि अगर मैं साक्षी हो जाऊँ, फिर तो मैं लड़ूँगा ही नहीं। वैसे भी मैं कुछ नहीं करूँगा, मैं बिल्कुल बेकार हो जाऊँगा। ये सब बातें क्या हैं? सो कृष्ण ने कहा अब इनको सीधे तरीके से समझाने से नहीं होगा। उल्टे तरीके से समझाओ। तो पहली चीज उन्होंने जो बतायी,

वो बतायी बहुत मजे तरीके से, कर्म की। कि बेटे तुम कर्म करते रहो और सब कर्म परमात्मा के चरण में डाल दो। हो नहीं सकता, absurd (असंभव)! बहुत से लोग आकर कहते हैं, माताजी हम जो भी कर्म करते हैं वो हम परमात्मा के चरणों में डाल देते हैं। मैंने कहा 'अच्छा', ये कैसे? फिर आप कर्म ही नहीं करते। अगर आप परमात्मा के चरण में डालते हैं तो आप ऐसा क्यों कहते हैं कि मैं जो कर्म करता हूँ? इस तरह की हमारे अन्दर अपने बारे में एक myth (आन्ति) हम लोग बना लेते हैं कि हम तो भाई जो भी करते हैं परमात्मा के चरणों में डाल देते हैं। लेकिन कुछ ऐसे सयाने लोग हैं जो आकर कहते हैं कि माँ हम तो सोचते थे कि मैं परमात्मा के चरणों में डालता हूँ, पर होता नहीं है। कोई ने कोई गड़बड़ बात। सो कृष्ण ने क्या कहा। उन्होंने जो बताया, एक absurd बात बता दी, कि आप ऐसा करते रहिए। माने जैसे आप समझ लीजिए, एक लड़का है वो बेलगाड़ी हाँक रहा है और घोड़ा पीछे रखा है। तो वाप आया बाहर। उसने कहा, बेटा, क्या कर रहे हो, कहने लगा। मैं गाड़ी हाँक रहा हूँ। उन्होंने कहा, भई घोड़ा सामने करो तब गाड़ी हाँकेगी। नहीं, मैं तो गाड़ी हाँकूँगा। उन्होंने कहा, अच्छा, हाँकते रहो, घोड़े पर चित्त रखना। जब तक तुम घोड़े पर चित्त रखोगे, तो फिर गाड़ी चलेगी। और वो गाड़ी चली नहीं। लेकिन माँ की ये बात नहीं। माँ ने कहा 'बेटे' वो घोड़ा सामने रखो और बांधो, नहीं तो घोड़ी नहीं चलने वाली। और न ही घोड़ी चलेगी और न ही तुम्हारी गाड़ी चलने वाली है। तुम जब तक ये नहीं करोगे तब तक हो नहीं सकता। पहले आत्मा को प्राप्त करो फिर आगे की बात करो। जब आप पार हो जाते हैं तो आप क्या कहते हैं, 'आ रहा है, जा रहा है, हो रहा है।' आप ये नहीं कहते कि मैं आ रहा हूँ, मेरे अन्दर से आ रहा है, मैं ये हूँ, मैं कर रहा हूँ। ऐसे तो कोई नहीं कहता। अभी आपने सहजयोगियों को देखा होगा 'माँ इनका नहीं बन रहा, इसका नहीं जमता है, ये जमने नहीं वाला'। Third



person (तृतीय पुरुष) में आदमी बात करने लगता है—अकर्म ! हम अमेरिका गए थे तो एक स्त्री हमारे साथ गयी थी। वो कहने लगी, मां मेरे लड़के को जरूर पार करा देना। मैंने कहा भाई तुम ही certificate दे दो। मैंने तो हाथ तोड़ डाले, अब तुम ही पार करा दो। कहने लगी, मां, लेकिन अगर पार नहीं होता तो कैसे certificate दें। तो मैंने कहा, यही तो बात है। जब होता ही नहीं है वो पार, तो तुम उसको false (झूठा) तो certificate (सर्टीफिकेट) दे नहीं सकती तो उसको पार कराओ। पहली बात पार कराओ। ये तो नहीं कह सकते कि तुमने पार करा दिया। क्योंकि जब हुआ नहीं तो पार कैसे ? वो तो होता ही नहीं। तो जो तृतीय पुरुष में हम लोग बोलना शुरू करते हैं, अकर्म में मनुष्य हो जाता है, वो ये नहीं सोचता मैं कर रहा हूँ। कोई विचार ही नहीं आता कि आप अकर्म में कर रहे हैं, कोई काम कर रहे हैं। कोई लोग कहते हैं, मां आपने हमें ठीक कर दिया। मुझे तो याद भी नहीं रहता। मैं पूछती हूँ, भैया क्या बीमारी थी, बताओ। कहने लगे, मां भूल गये ? मेरे को angiana (अन्जियना) था, मैं (होस्टन) Houston जा रहा था। अच्छा भैया, क्या हो गया, सो अब क्या बात है। हो गया न, ठीक ! हाँ आप भूल गये क्या ? मैंने कहा, हाँ मैं तो भूल गयी। मुझे तो याद नहीं कि मैंने तुमको ठीक कर दिया, क्योंकि कृष्ण के हिसाब से आप अगर विराट में आप समा गये, विराट के आप अंग प्रत्यंग हो गए हैं, अकबर हो गये हैं, जिसे हम अल्लाह-हो-अकबर कहते हैं, वो अगर आप अल्लाह हो गये हैं। तो आपको ये उंगली जो है, उसी का एक हिस्सा है। अब इस उंगली को अगर आपने थोड़ा सा कुछ rub (मसल) करके या इसको कुछ किसी तरह से संजो करके ठीक किया तो क्या आपने अपने ऊपर उपकार किया है कि दूसरों के ऊपर उपकार किया। दूसरा है कौन ? दूसरा कौन है ? ये भावना ही टूट जाती है कि कोई

दूसरा है। क्योंकि आप उस परमात्मा के अंग और प्रत्यंग बन जाते हैं। यही विराट का स्वरूप है। लेकिन स्वरूप को पाना चाहिए और Jung (श्री युंग) ने साफ-साफ कहा है कि अब मनुष्य कभी उठेगा तो वो collectively conscious (सामूहिक चेतनायुक्त) होगा। सामूहिक चेतना में जागृत होगा। ये नहीं कि हम आप भाई-भाई। और अगर मौका मिला तो कल सरफुटबल। अब आप हमारे शरीर के अंग प्रत्यंग बन गये। सामूहिक चेतना में आप जागृत हो गये। तभी कृष्ण का काम होगा। यही विशुद्धी चक्र है, जो यहाँ जा करके विराट बन जाता है। इस सर में जो सात चक्र हैं उसके पीठ है, उस पीठ पर बैठे हुए वो विराट है।

सो इस कृष्ण को समझने के लिए जब कृष्ण भक्ति हुई, तो कृष्ण ने उसमें भी चालाकी करी है। क्योंकि भक्त भी बड़े आसानी से हाथ नहीं लगते। वो भी एक one trek mind (एक ही रास्ते पर चलने वाला दिमाग) जिसे कहते हैं, बस, लग गये, तो लग गये अब हम भक्ति कर रहे हैं भगवान की। कृष्ण ने कहा कि 'पत्रम् पुष्पम् फलं तोयम्' जो भी पत्र, पुष्प, फल, पानी कुछ भी आप दीजिएगा, हम स्वीकारेंगे। लेकिन देने के time (समय) में एक शब्द में उन्होंने नचाया है जो लोगों की समझ में नहीं आता। कहा है कि लेकिन तुमको 'अनन्य' भक्ति करनी होगी। 'अनन्य' जब दूसरा नहीं रह जाता, जब आप हमारे अंग प्रत्यंग हो जाते हैं। जब परा-भक्ति में आप उतरते हैं तब हम लेंगे, उससे पहले नहीं। लेकिन 'अनन्य' शब्द को तो हम खा गये, और बड़े-बड़े Lecture (भाषण) लोग देते हैं। मैंने देखा हुआ है, घंटों Lecture (भाषण) देते हैं। सोचे तीन इसमें आप समझ सकते हैं, उनका कर्म योग, उनका ज्ञान योग और उनका भक्ति योग। कि अगर परमात्मा को पाना है तो पहले उसके अंग प्रत्यंग बनना चाहिए, 'अनन्य' होना चाहिए। जब तक आप अनन्य नहीं हैं, अनन्य भक्ति जो है उसको



प्राप्त होना चाहिए। ये कृष्ण ने साफ-साफ कह दिया है। लेकिन जो पंडित होते हैं और जो वेदाभ्यास करते हैं वो शायद चरमे की वजह से वो चीजें देखते ही नहीं जो देखने की होती है। और कृष्ण को समझने के लिए तो तीक्ष्ण दृष्टि चाहिए क्योंकि बुद्धि की बिल्कुल पराकाष्ठा है। आप, उसके सामने आप ठहर ही नहीं सकते उनकी बुद्धि के सामने, इतने प्रकाशवान बुद्धिमान वो हैं। और वो चाहते हैं आपको जरा नचाएं जिससे आप ठोक रास्ते पर आएँ। 'अब मैं नाथ्यो बहुत गोभाल'। और जब ये आप उससे कहिएगा कि भईया अब नचाना बंद कर और मुझे तो बस अपने आत्म-साक्षात्कार में उतार ले, तब ही उतरते हैं। इस लिए उन्होंने कहा मुझे तू शरणागत हो जा। कृष्ण शरणागत हो जा तो। इस विशुद्धि में बसे हुए श्री कृष्ण जो हैं इनको आपको जागृत करना पड़ेगा। जब तक ये जागृत नहीं होंगे तब तक आपको विशुद्धि चक्र की तकलीफ रहेगी।

अब विशुद्धि चक्र में भी तीन अंग हैं: right, left और बीच में। जब श्री कृष्ण बालावस्था में थे, जब उनका जन्म हुआ, जब उनकी बहन विष्णु-माया थी तब उनका left side में, यहाँ पर प्रादुर्भाव था, बाल कृष्ण की तरह। और जब वो बड़े होकर के राजा हो गए तो उनका right side यहाँ पर 'विट्ठल' यहाँ पर कि वो राजा बन करके और द्वारिका में राज्य करने गए। और बीचों बीच साक्षात् श्री कृष्ण जो कि हर हालत में श्री कृष्ण हैं। इस तरह से इस चक्र के तीन अंग हैं। अब जिनकी आदत बहुत ज्यादा डांटने की, चिल्लाने की, चीखने की और दूसरों को अपने शब्दों में रखने की और दूसरों को बुरी तरह से बात करने की और दूसरों को दुःख देने की अपने शब्दों से, ऐसी आदतें जिन आदमी की होती है उसकी right विशुद्धि पकड़ी जाती है। और उससे अनेक रोग उसे हो जाते हैं। जिस आदमी की ये आदत है कि सबके सामने गर्दन झुकी रहती है। चाहे जो भी कहो, हाँ भाई ठीक है,

कोई भी गुरु आए उसके चरण छू लिए, उसके चरण छू लिए और सब चीज के चरण छूते फिरे रात दिन, उनकी left विशुद्धि पकड़ जाती है। जो आदमी अपने को हमेशा दोषी समझता है, जो समझता है कि मेरे में अनन्त दोष है, उसकी left side पकड़ जाती है। और जो मनुष्य अपने को सोचता है कि मैं तो दुनिया का सबसे बड़ा हूँ, मैं जो करूँ सो कायदा, मैं जो कहूँ सो दिशा। ऐसा जो आदमी बोलता है उस आदमी की right side पकड़ जाती है। और right side पकड़ने से spondylitis (स्पॉन्डिलाइटिस) और दुनिया भर की बीमारियाँ हो सकती हैं। Left side पकड़नेसे angina (हृदय में रक्त संचार कम होने से होने वाली बीमारी) बगैरह हो सकता है और right side पकड़ने से जुकाम, सर्दी इतना ही नहीं और जिसे हम कहते हैं कि asthma (दमा) उसका भी इसमें प्रादुर्भाव हो सकता है। जिस आदमी का बहुत काम करता है जो आदमी, और बहुत चीख-चीख के बोलता है और सबसे बहुत दरोगागिरी करता है उस आदमी को जो heart attack (दिल का दौरा) आता है जिसे हम active heart attack कहते हैं वो आदमी heart attack (दिल का दौरा) उसको आ करके, बहुत लोग तो बोलते ही बोलते साफ हो जाते हैं। भाषण देते ही देते समाप्त, सीधे। क्योंकि इस कदर अपने को वो शब्दों से दूसरों को दवाते हैं उनको नीचा करते हैं, उनके लिए ऐसी-ऐसी बातें कहते हैं जिससे दूसरा आदमी जो है एकदम आवाक रह जाता है। और बहुत ही ज्यादा उद्दण्ड और घमंड और जिसे कहना चाहिए पूरी तरह से arrogant आदमी होता है जिसको किसी की भावना का विचार नहीं रहता है और उसे बुरी तरह से डांटता रहता है, ऐसा आदमी किसी भी बीमारी से प्रभावित हो सकता है और उसको दूसरी बीमारी हो सकती है वो है paralysis, heart attack, paralysis (लकवा, दिल का दौरा, लकवा)। हाथ उसका जकड़ सकता है right hand उसका जकड़ सकता है। ऐसे



आदमी जोकि अपने को बड़ा विद्वान समझते हैं उनकी तो ये हालत हो सकती है कि वो इतने अति विद्वान हो जाते हैं कि आपकी जो बुद्धि है वही आपको चकाने लगती है। वही आपके खिलाफ चलती है। Your intelligence cheats you at a point (आपकी होशियारी किसी वक्त पे आपको धोखा देती है) और अपने को, दूसरों को चकाते चकाते आप अपने को चकाने लग जाते हैं और आपको आश्चर्य होता है कि भई मुझी को मैं चका रहा हूँ। मैं दूसरों को चकाने गया था, मैं अपने को, मेरे को कैसे चकाने लग गया? और इसमें फिर कोई-कोई बीमारीयां ऐसी लोगों को हो जाती हैं कि जिसमें वो जब चाहें तब वो ठीक भी नहीं हो सकते हैं। क्योंकि जैसे ही वो चाहते हैं उनको फिर वो चकाने वाली बुद्धि फिर से उनको परास्त कर देती है। ये सब बातें सही हैं। आपको हम इसको दिखा सकते हैं। बहुत लोगों को ऐसे ही बीमारियों में जब हमने मदद करने की कोशिश की तो हठात् वो कोई भी काम कर लेते हैं, हठात्। लेकिन अगर आप कहें अब पर हटाइये, तो नहीं हो सकता। क्योंकि उनकी खुद ही बुद्धि जो है वो परास्त हो गयी है।

अब आपने देखा है कि जो बीच में श्रीकृष्ण हैं वो लीलामय हैं। उनके लिए सब सृष्टि एक लीला है। होली भी एक लीला है। उस वक्त उन्होंने संसार में आकर जितनी भी विधि वगैरह से लोगों को बिल्कुल ग्रसित कर दिया था, उसको अच्छे से तोड़-फोड़ करके ठीक कर दिया। किसी भी विधि को नहीं छोड़ा। मुदामा को सिर पर चढ़ा लिया। उन्होंने जाकरके और विधुर के घर साग खा लिया। उन्होंने हर तरह से जितनी भी विधियां और जितनी भी पारस्परिक गंदगियां थीं उनपर ऐसी तलवार उठायी कि सब चीज को तोड़-ताड़ करके, नष्ट करके। ये सारी सृष्टि एक लीला है, उनके लिए ये लीला है। और जब सहजयोगी पार हो जाते हैं, तब उनके लिए भी सारी सृष्टि जो

दिखाई देती वो एक साक्षी है। इसके ओर साक्षी के स्वरूप से देखते हैं। वो जो कुछ भी उनको पहले हरेक चीज से लगाव था वो टूट करके वो देखता है, अरे! ये तो नाटक था। ये तो नाटक टूट गया। अब किस लिए दौड़ रहे हैं। पहले तो जब शिवाजी महाराज आये समझ लीजिए स्टेज पर तो इन्होंने भी तलवार निकाल ली। जब वो गुस्सा करने लगे तो ये भी गुस्सा करने लगे। ये भी शिवाजी महाराज हो गये। जिस वक्त ये नाटक खत्म हुआ, कहने लगे, हे भगवान ये तो नाटक था। तो वो नाटक सब खत्म हो जाता है और मनुष्य अपनी जगह आ जाता है। ये श्रीकृष्ण की देन है। ये इन्होंने हमारी चेतना में विशेष स्वरूप दिया है। कि जब वो जागरूक हो जाते हैं तो हम साक्षी स्वरूप हो जाते हैं। और दूसरा एक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं, क्योंकि लीलामय है कि हमारे अन्दर जो अहंकार और प्रति-अहंकार जिससे कि हम हमेशा डरते हैं और दूसरों से दबते हैं, दोनों को वो अपने अन्दर खींच सकते हैं, दोनों को अपने अन्दर समा सकते हैं। और इसलिए किसी भी अहंकारी आदमी को आप देख लीजिए। जैसे कि आपने देखा कि दुर्योधन को बहुत अहंकार था, उसको उन्होंने ठिकाने लगा दिया। साड़ी द्रौपदी की बढ़ती गयी, बढ़ती गयी, दुर्योधन थक गया, उसका अहंकार चकनाचूर। जो भी अहंकारी आदमी होता है उसपर इनकी गदा अगर चल पड़े तो वो खेल खेल में ऐसा बचा देते हैं कि वो आदमी परास्त हो जाए। उसी प्रकार अगर कोई दबू आदमी है, या कोई आदमी जो समाज से दबा हुआ है, जो दरिद्र है, जिसके पास मुदामा जैसे, उसका मान करना, उसके मित्रत्व को इतना बढ़ावा देना और उसके लिए इस कदर दिल भरके दिल खोल के उसके लिए सब कुछ देना, ये भी काम श्रीकृष्ण का है। उनकी महिमा जितनी गायी जाये सो कम है। आज ६००० वर्ष हो गये वो यहाँ पधारे थे। उनको किसने जाना? सिर्फ गीता अर्जुन से बताया और किसी से बताया नहीं। पर

लिखायी किससे? वो सोचना चाहिए। देखिए कृष्ण की लीला हर जगह किस तरह से बन्धनों को तोड़ती है। लिखाई उससे जो व्यास। व्यास जो पराशर का लड़का था, लेकिन वास्तव में वो एक घोरमनी का लड़का था। और वो भी किसी कायदे कानून का नहीं, बेकायदा। इसलिए व्यास से लिखाई कि ऐसा ही आदमी, सद्पुरुष कैसे हो सकता है? क्योंकि जाति और उसके बन्धन और ये बहुत कायदे कानून करने वाले लोगों को दिखाने के लिए कि सद्पुरुष कहीं भा पंवा हो सकता है। सद्पुरुष की जाति, धर्म आदि कुछ नहीं पूछा जाता। लेकिन यही पूछा जाता है कि सद्पुरुष कौन है? इसको तोड़ने के लिए, इसका सबका निंदध करने के लिए, श्रीकृष्ण ने गीता भी लिखाई तो किससे, तो व्यास से। उनकी जाकर लीला देखिए तो जैसे कहते हैं कि हरेक को उन्होंने, उनकी जो चुटुल थी, उस चुटुल से हरेक को ठीक कर दिया। उनकी चुटुल बड़ी प्यारी थी, उनकी चुटुल बड़ी गहरी थी और इतनी तीक्ष्ण थी कि उसके चक्र से कोई बच नहीं सकता।

कल होली है, आप सबको होली मुबारक हो। होली के दिन हमको ये सोचना चाहिए कि कोई से भी गंदे काम करने से कृष्ण का कभी भी विचार नहीं आ सकता। गंदगी करना, गालियाँ देना, वगैरह, ये कृष्ण के काम नहीं है। हमको बहुत माधुर्य से एक दूसरे से बात करनी चाहिए। होली

का मतलब होता है कि जो कुछ भी कृष्ण स्वयं। उनको राधा क्या थी, आह्लाद आदिशक्ति, जो दुनिया को आह्लाद दे, जिससे मन बाँछित हो, चाहे ये तो आपके घर का मेहतर हो, चाहे कोई सबसे जमादार हो सबसे गले मिलिए, सबसे अपना प्रेम बाँटिए। ये कृष्ण की मुख्य इच्छा थी जिस लिए उन्होंने होली का आरम्भ किया था। और हम लोग जो हैं उस वक्त सबको गाली देते हैं अपनी जवान खराब करते हैं। जो जवान श्रीकृष्ण की वजह से ही चल रही है, ये जवान भी हमारी जो सोलह चीजें हैं जैसे नाक, कान वगैरह, सब कुछ जो वगैरह सब कुछ है, ये सब को श्रीकृष्ण की आज्ञा से चलते हैं वहां हम लोग गाली गलोच करते हैं। उनकी सुभत्ता, उनकी मधुरता, उनकी मोहकता, वो हमारे जीवन में आनी चाहिए। तभी हम कहेंगे कि ये होली हुई। जिसमें कि एक तरह से हमने अपने सौंदर्य को पाया। हमने सौंदर्य को बाँटा, और लोगों को इसका मजा दिया। लेकिन जिस तरीके से गंदगी और बहुत ही नग्नता से होली खेली जाती है, मेरी समझ में नहीं आता कि लोगों ने हरेक चीज का इतना विपर्यास कैसे कर दिया और इस कृष्ण को भी कितना अपमानित कर दिया। कल आपकी होली है, आप लोग खूब होली खेलिए। लेकिन उस कृष्ण को याद रखें, जिसने आपसे बताया कि आपको उस विराट के अंग और प्रत्यंग होना है।